वर्तमान परिदृश्य में मोबाइल लर्निंग एवं सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव एवं शिक्षा

अश्वनी कुमार मिश्र*

***असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, नागरिक पी.जी. कॉलेज जंघई, जौनपुर**

DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.19463818**

Received on: 21/03/2026 Accepted on: 29/03/2026 Published on: 08/04/2026

सारांश:

21 वीं सदी के तीसरे दशक में तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव दिनोंदिन समेटते जा रहे हैं। चूँकि शिक्षा के सन्दर्भ में गुणात्मकता एवं परिणाम आधारित अधिगम के रूप में महसूस किया जा रहा है, ऐसे में नई शिक्षा नीति 2020 विद्वानों को एक तकनीकी मंच में एकत्र होने का बिगुल बजाये हुए है। इस कसौटी पर खरे उतरने के लिए मोबाइल अधिगम एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स के साथ शिक्षण में और अधिक सक्रियता बढ़ जाती है। यदि देखा जाए तो बिना मोबाइल लर्निंग के हम एक समावेशी विद्यार्थी का निर्माण नही कर सकते हैं, विगत दिनों हमारी मूलभूत आवश्यकता में रोटी, कपडा एवं मकान एक साधन था परन्तु आज चौथा पक्ष मोबाइल व संचार के साधन भी अपनी भूमिका को सिद्ध कर चुके हैं। आज समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रोजगार, राजनीति, चिकित्सा एवं धर्म सभी को तकनीकी दुनिया अलग-थलग करने पर हम अपना सरोकार नही मान पाते हैं। विद्यार्थियों के प्रवेश, कक्षा अन्तः क्रिया, पियर लर्निंग, ब्लेंडेड माध्यम शिक्षा, दोहरी डिग्री, विशाल खुला ऑनलाइन पाठ्यक्रम (MOOCs), मूल्यांकन प्रणाली एवं परीक्षा फल इत्यादि की गुणवत्ता को तकनीकी दुनिया तीव्र गति प्रदान किए हुए है। विद्यार्थी द्वारा सोशल साइट्स के माध्यम से अपने शैक्षिक आचार-विचार, रचनात्मकता, सृजनात्मकता, मित्रों से अध्ययनशील वार्तालाप, शिक्षण सक्रियता का परिचयात्मकता संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक का स्वरूप शैक्षणिक माला के रूप में अपने में संजोये हुए है। नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि सीखने का वातावरण आकर्षक और सहायक बनाया जाए। पाठ्यक्रम, अध्यापन, निरंतर मूल्यांकन और छात्रों कि मदद गुणवत्तापूर्ण ढंग से सीखने के लिए किया जाए। ऐसे में मोबाइल, टेबलेट व लैपटॉप द्वारा विविध सोशल नेटवर्किंग साइट्स की उपयोगिता सहज ही बढ़ जाती है।

कुंजी शब्द: *मोबाइल लर्निंग, सोशल मीडिया.*

मोबाइल लर्निंग- मोबाइल लर्निंग या एम-लर्निंग एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सामग्री प्रदान करने के लिए स्मार्टफ़ोन और टैबलेट जैसे पोर्टेबल उपकरणों का उपयोग करता है जिससे उपयोगकर्ता कहीं भी और कभी भी शिक्षण सामग्री तक पहुँच

सकते हैं। यह दृष्टिकोण छोटे-छोटे मॉड्यूल प्रदान करके, सहयोग को प्रोत्साहित करके और ऑन-डिमांड सामग्री के माध्यम से जुड़ाव और ज्ञान धारण क्षमता में सुधार करके सुलभ, वैयक्तिकृत और लचीली शिक्षा को बढ़ावा देता है।

मोबाइल लर्निंग कैसे काम करती है

पोर्टेबल डिवाइस: सामग्री छोटे स्क्रीन वाले उपकरणों जैसे स्मार्टफ़ोन, टैबलेट या अन्य हैंडहेल्ड कंप्यूटर पर उपलब्ध कराई जाती है।

ऑन-डिमांड एक्सेस: शिक्षार्थी जब चाहें और जहाँ चाहें शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच सकते हैं और गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

छोटे आकार की सामग्री: बड़ी शिक्षण सामग्री को अक्सर छोटे, सुपाच्य मॉड्यूल (माइक्रोलर्निंग) में विभाजित किया जाता है ताकि कम ध्यान अवधि के अनुरूप हो और सीखने को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

व्यक्तिगत गति: शिक्षार्थी अपनी गति से अध्ययन कर सकते हैं, सामग्री को समझने के लिए जितना आवश्यक हो उतना कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

मोबाइल लर्निंग के प्रमुख लाभ

सुलभता: यह शिक्षा को और अधिक सुलभ बनाता है, खासकर उन लोगों के लिए जो पारंपरिक कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो सकते या जिन्हें दूरस्थ रूप से सीखने की आवश्यकता है।

लचीलापन: यह व्यस्त दिनचर्या में सीखने को शामिल करने की अनुमति देता है, जिससे चलते-फिरते भी निरंतर सीखने में मदद मिलती है।

बढ़ी हुई सहभागिता: छोटे-छोटे पाठ, गेमिफिकेशन और इंटरैक्टिव सुविधाएँ छात्रों की सहभागिता को बढ़ा सकती हैं और ज्ञान धारण क्षमता में सुधार कर सकती हैं।

लागत-प्रभावशीलता: मोबाइल उपकरणों पर डिजिटल शिक्षण सामग्री, कागज़ की किताबों जैसे पारंपरिक माध्यमों की तुलना में अधिक लागत-प्रभावी हो सकती है।

बेहतर सहयोग: मोबाइल उपकरण तत्काल प्रतिक्रिया की सुविधा प्रदान करते हैं और नए छात्र समुदायों और सहयोगात्मक शिक्षण अनुभवों के निर्माण को बढ़ावा देते हैं।

मोबाइल लर्निंग के उदाहरण

भाषा सीखने वाले ऐप्स: डुओलिंगो जैसे ऐप्स उपयोगकर्ताओं को अपनी गति और स्थान पर भाषाएँ सीखने में मदद करने के लिए माइक्रोलर्निंग और गेमिफिकेशन का उपयोग करते हैं।

कार्यस्थल प्रशिक्षण: विद्यार्थियों को सीधे उनके फ़ोन पर सुलभ और आकर्षक जानकारी और प्रशिक्षण मॉड्यूल प्रदान करने के लिए मोबाइल लर्निंग का उपयोग कर सकते हैं।

जस्ट-इन-टाइम लर्निंग: शिक्षार्थी ट्यूटोरियल और जानकारी को ठीक उसी समय प्राप्त कर सकते हैं, जब उन्हें इसकी आवश्यकता होती है, जैसे कि कार्य-संबंधी कार्य या यात्रा के दौरान।

स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 25 दिसंबर, 2021 को शुरू की गई थी। इसे उत्तर प्रदेश निःशुल्क टैबलेट और स्मार्टफोन योजना के नाम से भी जाना जाता है और इसका उद्देश्य राज्य के पात्र छात्रों को निःशुल्क स्मार्टफोन या टैबलेट प्रदान करना है। यह योजना चरणों में क्रियान्वित की जा रही है और प्रौद्योगिकी एवं कौशल विकास के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने के राज्य के प्रयासों का एक हिस्सा रही है।

- **डेटा अपलोड:** दिसंबर 2021 तक, पोर्टल पर लगभग 27 लाख छात्रों का डेटा अपलोड किया गया था।
- **वितरण:** सितंबर 2023 में, उत्तर प्रदेश सरकार ने पहले चरण में 3.75 लाख स्मार्टफोन वितरित करने की योजना की घोषणा की थी, जिसके लिए 372 करोड़ रुपये मंजूर किए गए थे।
- इस योजना से करीब 1 करोड़ युवाओं को फायदा होगा।. इस योजना के क्रियान्वयन हेतु राज्य सरकार द्वारा 3000 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है।
-

सोशल मीडिया की अवधारणा - इंटरनेट के इस युग ने सभी दूरियों को और भौगोलिक सीमाओं को मिटा दिया है। आज आप विश्व के किसी कोने में बैठे अपने मित्र से/सम्बन्धी से पलक झपकते ही बात तो कर ही सकते हैं, उन्हें देख भी सकते है (घोस एवं ठाकुरता, 2013)। ईमेल, वेबसाइट इत्यादि जैसी सुविधाओं ने समय, दूरी सभी की प्रतिबधता को हटाकर हमें अपनों के और करीब ला दिया है। इसी कड़ी में एक नया नाम जुड़ा वह है सोशल मीडिया /सोशल नेटवर्किंग साइट का (गौड़, 2010)।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स - सोशल नेटवर्किंग साइट्स ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म हैं जो उपयोगकर्ताओं को प्रोफ़ाइल बनाने, दूसरों से जुड़ने और जानकारी साझा करने की सुविधा देते हैं। इसके प्रमुख उदाहरणों में फ़ेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, टिकटॉक और लिंक्डइन शामिल हैं। ये साइट्स व्यक्तिगत संपर्क बनाए रखने से लेकर पेशेवर नेटवर्किंग और ब्रांड मार्केटिंग तक, कई तरह के उद्देश्यों को पूरा करती हैं।

दुनिया में सर्वाधिक इस्तेमाल में लाये जाने वाले सोशल नेटवर्क ?

क्रमांक	**सोशल साइट**	**स्थापना वर्ष**	**संस्थापक**
1	फेसबुक	2004	मार्क जुकरबर्ग एव अन्य

2	यूट्यूब	2005	चाड हर्ले एव अन्य
3	व्हाट्सएप मैसेंजर	2009	ब्रेन एक्टन एवं जानकूम
4	फेसबुक मैसेंजर	2011	फेसबुक पोर्टल
5	इंस्टाग्राम	2010	केविन स्यस्त्रोम एवं माइक क्रिगेर
6	टम्बलर	2007	डेविड कार्प
7	गूगल +	2011	--------
8	ट्वीटर	2006	जैक डोर्सी
9	स्नैपचैट	2011	इवान स्पिएगेल एवं अन्य
10	स्काईपे	2003	निकलस जेम्स स्ट्रोम

स्रोत: सोशल मीडिया मार्केटिंग (+160 डेटा पॉइंट्स) 2018

लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइट्स

फ़ेसबुक: व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए अपडेट, फ़ोटो और वीडियो साझा करने और मैसेंजर के माध्यम से जुड़ने का एक प्लेटफ़ॉर्म।

यूट्यूब: मुख्य रूप से एक वीडियो-शेयरिंग प्लेटफ़ॉर्म जहाँ क्रिएटर अपनी सामग्री प्रदर्शित कर सकते हैं।

इंस्टाग्राम: फ़ोटो और वीडियो जैसी विज़ुअल सामग्री साझा करने पर केंद्रित एक प्लेटफ़ॉर्म।

टिकटॉक: लघु-फ़ॉर्म वीडियो सामग्री के लिए जाना जाने वाला एक प्लेटफ़ॉर्म।

लिंक्डइन: करियर विकास और व्यावसायिक संबंधों के लिए एक पेशेवर नेटवर्किंग साइट।

एक्स (पूर्व में ट्विटर): एक माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफ़ॉर्म जहाँ उपयोगकर्ता छोटे संदेश पोस्ट करते हैं।

पिनटेरेस्ट: वर्चुअल पिनबोर्ड का उपयोग करके विचारों को खोजने और सहेजने के लिए एक साइट।

स्नैपचैट: क्षणिक संदेशों और फ़ोटो साझा करने का एक प्लेटफ़ॉर्म।

व्हाट्सएप: मेटा के स्वामित्व वाला एक लोकप्रिय मैसेजिंग ऐप।

रेडिट: उपयोगकर्ता-जनित सामग्री और विविध विषयों पर चर्चाओं वाला एक प्लेटफ़ॉर्म।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रमुख कार्य

संबंध बनाना और बनाए रखना: ये उपयोगकर्ताओं को मित्रों, परिवार और सहकर्मियों के संपर्क में रहने की सुविधा प्रदान करती हैं।

सूचना साझा करना: उपयोगकर्ता समाचार, लेख, फ़ोटो और वीडियो साझा कर सकते हैं।

व्यावसायिक नेटवर्किंग: लिंक्डइन जैसे प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करियर विकास और नौकरी की तलाश के लिए किया जाता है।

मार्केटिंग और विज्ञापन: व्यवसाय इन साइटों का उपयोग लक्षित दर्शकों तक पहुँचने के लिए अनुकूलित सामग्री और विज्ञापनों के साथ करते हैं।

समुदाय निर्माण: उपयोगकर्ता साझा रुचियों के आधार पर समूहों और समुदायों में शामिल हो सकते हैं।

प्लेटफ़ॉर्म उपयोग

सबसे लोकप्रिय प्लेटफ़ॉर्म: व्हाट्सएप सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला प्लेटफ़ॉर्म है, उसके बाद फेसबुक और इंस्टाग्राम का नंबर आता है। यूट्यूब भी काफ़ी लोकप्रिय है, खासकर वीडियो सामग्री के लिए।

उपयोगकर्ता व्यवहार: कई उपयोगकर्ताओं के कई सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर खाते होते हैं और छात्रों का एक बड़ा हिस्सा उन पर दिन में कम से कम 4 घंटे बिताता है।

पहुँच: स्मार्टफ़ोन सोशल नेटवर्किंग साइट्स तक पहुँचने का सबसे प्रमुख तरीका है, उसके बाद डेस्कटॉप या लैपटॉप का नंबर आता है।

मोबाइल लर्निंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स लर्निंग के मुख्य तथ्य

- **छात्र की भागीदारी:** छात्र निष्क्रिय दर्शक नहीं होते, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल होते हैं।
- **व्यावहारिक गतिविधि:** इसमें व्यावहारिक अभ्यास, समूह चर्चा, केस स्टडी और अन्य आकर्षक गतिविधियों को शामिल किया जाता है।
- **गहरी समझ:** यह दृष्टिकोण छात्रों को सामग्री के साथ जुड़ने और विषय वस्तु की गहरी और स्थायी समझ विकसित करने में मदद करता है।
- **आलोचनात्मक सोच:** छात्रों को जानकारी का विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच विकसित होती है।
- **छात्र-केंद्रित:** पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित मॉडल के बजाय, शिक्षण इस बात पर केंद्रित होता है कि छात्र क्या सीख रहे हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 में तकनीकी :

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। नई शिक्षा नीति 2020 पांच बुनियादी स्तम्भ शिक्षा तक सभी की पहुँच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही है। भाग तीन के अध्याय 23 एवं 24 में क्रमशः तकनीकी का उपयोग एवं एकीकरण व ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा पर महत्वपूर्ण चर्चा की गयी है। प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में प्रौद्योगिकी को कैसे शिक्षा अधिगम प्रक्रिया से सुगमता से कैसे जोड़ा जाय। इसका मार्ग प्रशस्त करता है तथा जो शिक्षा कक्षा-कक्ष प्रक्रिया, शिक्षको के प्रशिक्षण, सेवारत शिक्षको के कौशल को बढ़ावा देने का मार्ग सुझाता है। अधिगम सॉफ्टवेयर को उन्नत करना।

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की संकल्पना, राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीकी मंच और अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीकी द्वारा विचारो के साझाकरण करना। शिक्षको को सामूहिक ऑनलाइन मंच की बात तथा सभी समूहों की दिव्यांग बच्चो व बालिकाओ की शिक्षा तक पहुँच को बढ़ावा देता है। डिजिटल इंडिया अभियान, आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस, 3डी/7डी वर्चुअल रिएल्टी, कौशल आधारित गुणवत्ता, भाषा प्रोसेसिंग, मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन, स्मार्ट बोर्ड, हस्त संचालित कम्प्यूटिंग उपकरण, एडेप्टिव कंप्यूटर टेस्टिंग, शैक्षिक साफ्टवेयर विकास और ई कंटेंट (दीक्षा प्लेटफार्म व स्वयम मंच) इत्यादि विषय वर्तमान शैक्षिक चुनौतियों को देखते हुए उपयोगी हैं। कुछ प्रमुख्य पहलुओं की चर्चा निम्न है –

- ✓ ऑनलाइन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन
- ✓ सार्वजानिक डिजिटल संसाधन
- ✓ ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण
- ✓ ऑनलाइन सामग्री निर्माण, डिजिटल सामग्री कोष और प्रसार
- ✓ डिजिटल सामग्री विभिन्न भाषाओं में
- ✓ दीक्षा, स्वयम और स्वयंप्रभा जैसे ई लर्निंग प्लेटफार्म
- ✓ टैबलेट व स्मार्ट फोन जैसे डिजिटल डिवाइस देना
- ✓ शिक्षकों को तकनीकी मंच से जोड़ना, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन
- ✓ ऑनलाइन मूल्यांकन जैसे पोर्टफोलियो, रूब्रिक्स, मानकीकृत टेस्ट व राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र परख, स्कूल बोर्ड, एनटीए
- ✓ डिजिटल शिक्षण सामग्री एवं नवीन शिक्षण मानक

सम्बंधित अध्ययन:

गुप्ता और कांवरे (2023) में अपने अध्ययन में पाया कि 89.69% वाट्सएप्प, 88.83% यूट्यूब, 47.59% टेलीग्राम, 30.41% फेसबुक, 13.74% ट्विटर , 4.46% लिंकडइन, 9.79% अन्य सोशल साइट्स का उपयोग करते हैं इन्होंने पाया कि ज्यादातर स्नातक विद्यार्थी (पुरुष व महिला दोनों कला वर्ग, कामर्स वर्ग एवं विज्ञानं वर्ग) वाट्सएप्प एवं यूट्यूब का सहारा लिया. **कंगे एवं शर्मा (2022)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने सामाजिक जीवन के प्रयेक पहलू मूल्य, संस्कृति, सम्बन्ध एवं जुड़ाव इत्यादि सभी पक्ष को प्रभावित किया है सभी से मिलना जुलना आना जाना उनसे मौखिक वार्तालाप कम हुआ है। **गुप्ता एवं चंद्रा (2021)** ने अपने अध्ययन में बताया कि- सभी विद्यार्थी मानते हैं कि वर्तमान में सोशल साइट्स ज्ञानार्जन करने में मदद करते हैं और आज यह शिक्षा का सबसे सशक्त साधन है। तालिका विवरण निम्न है -

क्रम संख्या	आयु वर्ग	हाँ अभिमत	नही अभिमत	कुल
1	18-19	30	0	30
2	19-20	42	0	42
3	20-21	50	0	50
4	21-22	44	0	44

5	22-23	18	0	18
6	23-24	16	0	16
	कुल	200	00	200

सिन्हा और सक्सेना (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि -

1. 37% छात्रों का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है, 31% अनिश्चित हैं और 32% का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक रवैया है। उपरोक्त से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि एक तिहाई से अधिक छात्रों का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है।

2. पुरुष स्नातक छात्रों में से 28% का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है, 35% अनिश्चित हैं, 37% का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक रवैया है।

जबकि महिला स्नातक छात्रों में से 50% का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है, 26% अनिश्चित हैं और 24% का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक रवैया है।

3. सरकारी स्नातक संस्थानों के छात्रों में से 48% का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है, 30% अनिश्चित हैं और 22% का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक रवैया है। जबकि निजी स्नातक संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों में से 28% का सोशल मीडिया के प्रति नकारात्मक रवैया है, 32% अनिश्चित हैं और 40% का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक रवैया है।

4. सहकर्मी शिक्षण समूह के 55% छात्रों का सोशल मीडिया के प्रति प्रतिकूल रवैया है, 28% अनिश्चित हैं और 17% का सोशल मीडिया के प्रति अनुकूल रवैया है। जबकि सोशल नेटवर्किंग समूह के 18% छात्रों का सोशल मीडिया के प्रति प्रतिकूल रवैया है, 35% अनिश्चित हैं और 47% का सोशल मीडिया के प्रति अनुकूल रवैया है।

5. स्नातक स्तर के 25% छात्रों की उपलब्धि का स्तर बुनियादी है, 52% की कुशलता का स्तर और 23% की उन्नत स्तर की उपलब्धि है।

मित्तल (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि मोबाइल उपकरणों द्वारा प्रदान की जाने वाली शैक्षणिक सुविधाएँ बेहतर संचार और सहयोग के माध्यम से कहीं भी कभी भी सीखने को बढ़ावा देती हैं, जिसका छात्रों द्वारा मोबाइल सीखने की स्वीकृति पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सीखने के लिए मोबाइल तकनीकों का उपयोग उनके उच्च स्तरीय चिंतन कौशल को भी बढ़ावा देता है और शैक्षणिक प्रबंधन में उनकी मदद करता है। मोबाइल शिक्षण पाठ्यक्रम और प्रभावी शिक्षण के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ है । शिक्षक सहयोग एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरा है, विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में इसकी महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है, क्योंकि भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मुख्य मार्गदर्शक शक्ति हैं। उनका समर्थन और प्रेरणा छात्रों द्वारा मोबाइल सीखने को अपनाने को प्रभावित करेगी। मोबाइल सीखने के उपकरण के गुण और उपयोगिता भी छात्रों द्वारा मोबाइल सीखने का उपयोग करने के निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वामित्व, आत्मीयता, सुविधा और उपकरणों को अपनी गति और आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने के आत्मविश्वास की अधिक भावना अंततः छात्रों की सीखने में भागीदारी को बढ़ाएगी।

कंवरिया ने (2018) में अपने लेख शिक्षा में तकनीकी की समझ एवं नवीन प्रयोग में अपनी बात कहा कि शिक्षा में बढ़ती तकनीकी, इसका अधिकाधिक न्यायसंगत प्रयोग, इसमें नवाचार एवं नयी–नयी प्रौद्योगिकी यथा वेब 2.0, मुक्त शैक्षिक संसाधन, इत्यादि ने शिक्षण-अधिगम को मानो पंख लगा दिए हैं। शिक्षा के क्षेत्र नित नयी संभावनाए खुल रही है, नित नए रूप में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में मदद कर रही है व नए-नए सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इन्ही परिणामो से उत्साहित होकर न केवल राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी शिक्षा में तकनीकी पर अत्यधिक ध्यान दिया जा रहा है। बदलते युग में अब हमारी बारी है कि हम शिक्षक एवं अधिगमकर्ता के रूप में अपने शिक्षण एवं अधिगम में तकनीकी का न्यायसंगत रूप से अधिकाधिक प्रयोग कर अपना सकारात्मक योगदान दे और शिक्षा के नए युग से कदम से कदम मिलाकर चले। **मैथेव और चंद्र (2017)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश उत्तरदाताओं (87.16%) ने घर पर सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया था। अधिकांश उत्तरदाताओं (66.06%) ने विभाग/कॉलेज में सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया था। अधिकांश उत्तरदाताओं (63.76%) ने लाइब्रेरी में सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं किया था। अधिकांश उत्तरदाताओं (68.35%) ने दोस्तों के घर पर सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं किया था। अधिकांश उत्तरदाताओं (59.63%) ने दिन में लगभग दो घंटे सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया था।

निष्कर्ष:

सांख्यिकीय मंत्रालय के सर्वे के अनुसार भारत में 85.5% परिवारों के पास कम से कम एक स्मार्टफोन है। ग्रामीण क्षेत्रों में 15-29 आयु वर्ग के लगभग 96.8% लोगों ने पिछले तीन महीनों में मोबाइल फोन का उपयोग किया। शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा 97.6% है। दुनिया भर में लगभग 7.21 अरब स्मार्टफोन हैं। इसे परिप्रेक्ष्य में रखें तो, यह संख्या 8 अरब वैश्विक आबादी का लगभग 90% है। इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से कह सकते है कि मोबाइल लर्निंग के माध्यम से विभिन्न ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग साइट्स से जुड़कर विद्यार्थी शिक्षण सक्रियता करते है और वो अपना कौशल दक्षता हासिल करते हैं। यदि 2030 तक नई शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा संस्थान को बहु-विषयक बनाने कि योजना है और 2040 तक सभी उच्च संस्थान को बहु-विषयक रूप में खुद को स्थापित कारण है। उच्च संस्थानों का सकल नामांकन 50% करने के लक्ष्य रखा गया है। ऐसे में मोबाइल लर्निंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स द्वारा शिक्षण सक्रियता को बढ़ावा देना अति आवश्यक है। बिना हम तकनीकी का सहारा लिए नई शिक्षा नीति 2020 के बनाये लक्ष्यों तक पहुँचना उसी प्रकार होगा जैसे किसी नदी के तट पर बिना नाविक के नौका का जो अपने तट से लहरों की थपेड़े खाते हुए अपने गंतव्य स्थान से दूर चले जाते है। आज यह जरुरी दिखाई देता है कि आधुनिकता व आधुनिक संसाधनों के बीच सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के तेज बहाव को शिक्षा के क्षेत्र में संतुलित रखा जाय। आधुनिक भारत के सामने यह एक चुनौती है कि वह शिक्षा में इन

संसाधनों का प्रयोग कर शैक्षिक उत्कृष्टता को प्राप्त करे किन्तु यहाँ चुनौती यह भी है कि यह प्रयोग सही दिशा में सही तरीको से सही रूप में हो। कंटीले जंगली पौधों के साथ खुबसूरत खुशबूदार फलो के पौधे एक साथ बेतरतीबी से लगा दिए जाने से कभी सुन्दर व सुगन्धित बगीचे नहीं बना करते। कंटीली जंगली बेलें, नाजुक खुबसूरत फूल पत्तो की बेलो पर फैलकर उन्हें मुरझा दिया करती है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग में इन प्राकृतिक संदर्भो के भाव समाहित करने होंगे तभी शिक्षा के क्षेत्र में इनका सफ़ल प्रयोग हो सकेगा। हमें नीतिबद्ध व सुव्यवस्थित रूप में इस तकनीकी का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में करना होगा (श्रीवास्तव, 2016)। बदलते युग में अब हमारी बारी है कि हम शिक्षक एवं अधिगमकर्ता के रूप में अपने शिक्षण एवं अधिगम में तकनीकी का न्यायसंगत रूप से अधिकाधिक प्रयोग कर अपना सकारात्मक योगदान दे और शिक्षा के नए युग से कदम से कदम मिलाकर चले।

सन्दर्भ:

- https://explodingtopics.com/blog/smartphone-stats
- https://www.jagran.com/technology/tech-news-smartphone-penetration-in-india-survey-reveals-high-usage-rates-23950993.html
- https://www.yuvasathi.in/schemes-detail/up-free-tablet-smartphone-yojana
- https://timesofindia.indiatimes.com/city/lucknow/yogi-govt-to-start-distributing-25-lakh-smartphones-from-oct/articleshow/103973608.cms
- SAXENA and SINHA (2021). A COMPARATIVE STUDY OF PEER LEARNING AND LEARNING THROUGH NETWORKING SITES ON THE ATTITUDE TOWARDS SOCIAL MEDIA AND ACHIEVEMENT OF UNDERGRADUATE STUDENTS, shodh ganga, Rabindra nath tagore university.
- Ms.Ancy Mathew & Prof.B.P.Mahesh Chandra Guru M (2017) , New Media and Educational Development: AComparative Study on Uses and Gratifications of Social Networking Sites among University Students in Kerala and Karnataka States, University of Mysore, शोध गंगा
- NITI MITTAL (2019) A STUDY OF ACCEPTANCE OF MOBILE LEARNING IN HIGHER EDUCATION , JAYPEE INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY
- गुप्ता एवं कांवरे (2023) स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स कि उपयोगिता का शैक्षिक अन्तःक्रिया, एकाग्रता एवं शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, शोध गंगा गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर .

- कंगे एवं शर्मा (2022) सोशल नेटवर्किंग साइट्स का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव (रायपुर के विशेष सन्दर्भ में) शोध गंगा पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
- विकिपीडिया
- शिक्षा नीति 2020
- कंवरिया, वि (2018). शिक्षा में तकनीकी की समझ एवं नवीन प्रयोग . *भारतीय आधुनिक शिक्षा* .पृ०105-110.
- श्रीवास्तव, आर (2016). भारतीय शैक्षिक संदर्भो में सूचना व संप्रेषण तकनीकी विकास एवं चुनौतियाँ . *भारतीय आधुनिक शिक्षा* .पृ०62-71 .
- मंगल ,एस .के .और उमा मंगल (2009). *शिक्षा तकनीकी*. पृ०20-50. पी. एच.आई. पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली .
- http://www.social-media-marketing/new-global-al-social-media-research.com